REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

चेतना का स्वरूपः उपोत्पादवाद और सर्वचेतनवाद के विशेष सन्दर्भ में

अभिषेक कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर , दर्शनशास्त्र विभाग ,
गनपत सहाय पी. जी. कालेज, सुलतानपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना–

चेतना भारतीय और पाश्चात्य दोनों दर्शनविधाओं में केन्द्रीय अवधारणा रही है और आज भी प्रासंगिक है। पाश्चात्य संदर्भ में देखें तो अध्ययन की दृष्टि से इसे दो महत्वपूर्ण भागों द्वैतवाद और एकवाद में विभाजित किया जा सकता है। द्वैतवाद का ही एक भेद है– गुणात्मक द्वैतवाद और गुणात्मक द्वैतवाद के दो उपभेद हैं– उपोत्पादवाद और सर्वचेतनवाद। प्रस्तुत शोध आलेख उपर्युक्त दोनों सिद्धांतों के विश्लेषण पर ही केन्द्रित है।

मुख्य शब्द– चेतना, द्वैतवाद, एकवाद, गुणात्मक द्वैतवाद, उपोत्पादवाद, सर्वचेतनवाद।

आलेख के प्रारम्भ में सर्वप्रथम यह विचारणीय है कि चेतना क्या है? वस्तुतः चेतना एक बहुअर्थी शब्द है। विविध अध्ययन क्षेत्रों में इसके विविध अर्थ और तात्पर्य हैं। परन्तु, फिर भी, यदि साधारण रूप में देखें तो चेतना को आत्मनिष्ठता (Subjectivity), सचेतता (Awareness), अनुभव करने की क्षमता (Ability to experience), जागरूकता (Wakefulness), आत्मबोध (Sense of Selfhood) आदि के रूप में परिभाषित किया जाता है।[1] प्रस्तुत आलेख में दोनों विचारणीय सिद्धांतों में चेतना को समझने के लिए सर्वप्रथम इनके मूल स्रोत अर्थात् गुणात्मक द्वैतवाद को समझना समीचीन होगा। गुणात्मक द्वैतवाद के अनुसार जगत एक ही तरह के द्रव्य से निर्मित है जो कि भौतिक है। इसके दो गुण होते हैं–भौतिक और मानसिक। अभौतिक मानसिक धर्म जैसे–भावना, इच्छा, विश्वास आदि भौतिक द्रव्य यानी मस्तिष्क में निहित होते हैं। यद्यपि गुणात्मक द्वैतवादी चैतन्य गुणों की सत्ता स्वीकार करता है, परन्तु ये न तो भौतिक गुणों के समान हैं, और न ही इन्हें भौतिक गुणों में परिवर्तित करके समझा जा सकता है।

Property dualism....holds that there are mental properties (that is, characteristics or aspects of things) that are neither identical with nor reducible to physical properties.[2]

अब यदि इसके एक उपभेद उपोत्पादवाद (Epiphenomenalism) के बारे में विचार करें तो इस मत के अनुसार मन, शरीर के एक उपोत्पाद के अलावा कुछ भी नहीं है। उसका शरीर से सम्बन्ध उसी तरह है, जिस तरह धुंए का इंजन से या परछाई का आदमी से है। आदमी के चलने से उसकी परछाई चलती है, पर परछाई के चलने से आदमी नहीं चलता। इसी प्रकार शारीरिक, मानसिक का कारण होता है, परन्तु मानसिक कभी शारीरिक का कारण नहीं होता है। यहाँ कारण सम्बन्ध बिल्कुल एक तरफा है।

यह सिद्धान्त हमारे मानसिक घटनाओं या व्यवहार को मस्तिष्क की प्रक्रियाओं के ही प्रभाव के रूप में व्याख्यायित करता है, परन्तु ये भौतिक प्रक्रियाएँ इन मानसिक प्रक्रियाओं से अप्रभावित रहती है।

Epiphenomenalism is the view that mental events are caused by physical events in the brain, but have no effects upon any physical events. Behavior is caused by muscles that contract upon receiving neural impulses are generated by input from other neurons or from sense organs. On the epiphenomenalists view, mental events play no causal role in this process.[3]

व्यवहार में ऐसा प्रतीत होता है कि मानसिक घटनाएँ हमारे शरीर पर प्रभाव डालती हैं। ऐसा लगता है

कि तेज दर्द से हम सिकुड़ जाते हैं। डर वश हमारे हृदय की गति बढ़ जाती है, किसी झेंपने वाली (Embarrassing) घटना को याद करके चेहरा लाल पड़ जाता है, और किसी पुराने मित्र को देखकर चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती है। वास्तव में, ये समस्त कारणात्मक प्रक्रिया भौतिक स्तर पर होती है। हम दर्द के कारण नहीं सिकुड़ते, बल्कि उस तंत्रिकीय प्रक्रिया द्वारा जो कि दर्द का कारण है, हमारे हृदय स्पन्दन में वृद्धि के लिए डर जिम्मेदार नहीं है, अपितु वह स्नायुतंत्र जिससे डर उत्पन्न होता है। मन और मस्तिष्क के बीच के सम्बन्ध को थामस हेनरी हक्सले (Thomas Henry Huxley) ने एक साम्यानुमान (analogy) से समझाया है।

उनके अनुसार मन और मस्तिष्क का सम्बन्ध भाप और इंजन के बीच के सम्बन्ध जैसा है। जिस तरह इंजन की प्रक्रियाओं से भाप उत्पन्न होती है, परन्तु वह इन प्रक्रियाओं पर कोई कारणात्मक प्रभाव नहीं डालती, उसी प्रकार मानसिक भी तंत्रिकीय प्रक्रियाओं का परिणाम हैं, परन्तु इन प्रक्रियाओं पर ये कोई प्रभाव नहीं डालते।[4]

इस सिद्धान्त को 19वीं शताब्दी में चेतन यंत्रवाद (Conscious Automatism) के नाम से हक्सले (Huxley) और हॉजसन (Hodgson) द्वारा प्रतिपादित किया गया। विलियम जेम्स प्रथम विचारक थे, जिन्होंने 'एपीफेनोमेना' (Epiphenomena) शब्द का प्रयोग किया, जहाँ 'फेनोमेना' से तात्पर्य यह है कि जिसमें कारणात्मक क्षमता नहीं है और जेम्स वार्ड (James Ward) ने 1903 में 'एपीफेनोमेनालिज्म' (Epiphenomenalism) शब्द का प्रयोग किया।[5]

उपोत्पादवाद का समर्थन करते हुए ब्रिटिश दार्शनिक शैडवर्थ हॉजसन (Shadworth Hodgson) कहते हैं कि कोई चैतन्य अवस्था किसी अन्य चैतन्य अवस्था से उत्पन्न नहीं होती, अपितु दोनों का उद्भव मस्तिष्क की क्रियाओं से होता है और इस बात को कहने का कोई आधार नहीं है कि चैतन्य अवस्थाएं मस्तिष्क पर कोई प्रतिक्रिया करती हैं या उसकी क्रियाओं में हस्तक्षेप करती हैं।[6]

इसी प्रकार हेनरी हक्सले अपने लेख 'On the hypothesis that animals are automata, and its history' में कहते हैं कि पशु और सम्भवतः मनुष्य भी सजीव यांत्रिक प्राणी (conscious automata) हैं, उनमें चेतना होती है, परन्तु उनका व्यवहार एकमात्र भौतिक क्रियाविधियों से ही निर्धारित होता है।[7]

उपोत्पादवाद पर चर्चा के उपरान्त अब दूसरे सिद्धांत अर्थात् सर्वचेतनवाद (Panpsychism) पर विचार करना उचित होगा। सर्वचेतनवाद का अंग्रेजी रूपान्तर 'Panpsychism' शब्द इटली के दार्शनिक फ्रैन्सेस्को पैट्रिजी (Francesco Patrizi) द्वारा दिया गया है जो दो ग्रीक शब्दों से मिलकर बना है– 'Pan' (all) and 'Psyche' (Soul or Mind)[8] अर्थात् सर्वचेतनवाद वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार संसार के प्रत्येक पदार्थ में मन या चेतना अन्तर्निहित है। सभी अणु, पेड़–पौधे तथा जीव संवेदनशील हैं और इनके पीछे एक आदिम प्रकार का चैतन्य युक्त अंश विद्यमान है।

....All things in physical reality, even down to micro-particles have some mental properties.[9]

इस सिद्धान्त को गुणात्मक द्वैतवाद के अन्तर्गत रखा जाता है, क्योंकि यह जड़ के साथ–साथ चेतन गुणों को भी मान्यता देता है। यह एक प्राचीन सिद्धान्त है जो ग्रीक दार्शनिकों से लेकर स्पिनोजा, लाइब्नित्ज, ह्वाइटहेड आदि विचारकों के द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

ग्रीक दार्शनिकों मुख्यतः सुकरात पूर्व दार्शनिकों की अवधारणा को प्रतिपादित करते हुए एडवर्ड जेलर (Eduard Zeller) लिखते हैं–

ग्रीक दार्शनिक प्रकृति को सजीव मानते हैं। पौराणिक स्तर पर वे स्थल और समुद्र, पर्वत और नदी, वृक्ष और झाड़ी आदि जगत् की समस्त वस्तुओं को दिव्य आत्माओं से परिपूर्ण मानते थे और दार्शनिक स्तर पर समस्त जड़तत्व को चेतन मानते थे, यहाँ तक कि पत्थर आदि की भी शक्ति का विकास होता है। इस धारणा के आधार पर उनके दर्शन को सर्वचेतनवाद कहना उचित होगा।

The Greek always imagined nature as animate. On the mythical plane, everything, land and sea, mountains and rivers, trees and bushes were all for him full of divine beings; on the philosophic plane he imagined all matter as animate, not excepting even stones, for they too develop a force. It would be therefore more correct to speak of hylozoism or pansychism.[10]

स्पिनोजा ने उत्कट एकवाद का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार परमतत्व एक है, जिसे वह ईश्वर या प्रकृति कहते हैं। इस प्रकृति या ईश्वर में दो गुण पाये जाते हैं– मन या विचार और पदार्थ या विस्तार। ध्यातव्य है कि स्पिनोजा ईश्वर में अनन्तगुण मानते हैं, परन्तु ये दो गुण ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य जान सकता है, क्योंकि ये दोनों गुण मनुष्यों में भी पाये जाते हैं। स्पिनोजा के अनुसार प्रत्येक वस्तु में विस्तार और उसी के संगत विचार

होता है, जिसे वस्तु का प्रत्यय (Idea) कहा जाता है।

"In God/Nature there is necessarily the idea....of all things..."[11]

चूँकि प्रत्येक वस्तु के संगत एक प्रत्यय होता है, अतः यह कहा जा सकता है कि उसके पास मन है। इसे हमारे यानि मनुष्य के सन्दर्भ में देख सकते हैं। मनुष्य का मन उसके शरीर का प्रत्यय होता है, परन्तु यह एक सामान्य तात्विक सिद्धान्त है, यह प्रत्येक वस्तु पर लागू होता है।

Whatever we have asserted of the idea (that is, mind) of the human body must necessarily also be asserted of the idea of everything else.[12]

इस तरह स्पिनोजा भी सभी पदार्थों को मानसिक मानते हुए सर्वचेतनवाद की पुष्टि करते हुए प्रतीत होते हैं।

लाइब्निट्ज का सर्वचेतनावाद उनके चिदणुवाद (Monadology) सिद्धान्त पर आधारित है। चिदणु मानसिक गुण धर्म वाले बिन्दु सदृश सत्तायें हैं। इनके अनुसार सभी पदार्थ चेतन युक्त हैं। जिन्हें हम जड़ समझते हैं, उनमें भी सुप्त रूप में चेतना विद्यमान है, जिन्हें वह नग्न चिदणु कहते हैं। अपनी पुस्तक मोनाडोलॉजी में लाइब्निट्ज कहते हैं–

From this we see that there is a world of creatures, of living beings, of animals, of entelechies, of souls in the least part of matter.[13]

अर्थात् प्रत्येक वस्तु में चेतना अन्तर्निहित हैं, समस्त जगत चिदणुओं से व्याप्त है। इस तरह लाइब्निट्ज के दर्शन में सर्वात्मवाद या सर्वचेतनवान परिलक्षित होता है।

20वीं शती के विचारक ए0एन0 ह्वाइटहेड भी सर्वमानसवाद का प्रतिपादन करते हैं, जो उनके प्रसिद्ध सिद्धान्त 'अनुभव का अवसर' (Occasion of experience) या 'वास्तविक अवसर' (Actual Occasion) से प्रतिपन्न है। इनके अनुसार वास्तविक अवसर वे अन्तिम वास्तविकता है, जिनसे यह संसार निर्मित है। इसके दो ध्रुव हैं – भौतिक और मानसिक। मानसिकता और प्रकृति में कोई भेद नहीं है। प्रकृति के निर्माण तत्वों में मानसिक क्रियाएँ परिलक्षित होती हैं। इसी बात को अपनी पुस्तक 'Modes of Thought' के 'Nature alive' नामक अध्याय में वे कहते हैं–

This traditional sharp division between mentality and nature has no ground in our fundamental observation. [....] I conclude that we should conceive mental operations as among the factors which make up the constitution of nature.[14]

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपोत्पादवाद मानसिक और भौतिक दोनों को महत्व देता है और कहीं न कहीं मन या चेतना को भौतिक पर ही आश्रित कर देता है, परन्तु ध्यातव्य है कि उपोत्पादवाद, जड़वाद नहीं है, क्योंकि यहाँ मन और मस्तिष्क के तादात्म्य की बात नहीं की जाती है, जैसा कि जड़वादी कहते हैं, अपितु मानसिक घटनाओं के कारण के रूप में मस्तिष्क को लिया जाता है। वहीं सर्वचेतनवाद में जड़ता या भौतिकता का स्थान नहीं रह जाता। जिन्हें हम भौतिक कहते हैं उनमें भी चेतना सुप्त रूप में विद्यमान रहती है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. Consciousness. Wikipedia en.wikipedia.org/wiki/consciousness. Access 10 April, 2013.
2. Consciousness. Internet Encyclopedia of Philosophy www.iep.utm.edu/consciou/. Accessed 06 October, 2013
3. Epiphenomenalism. Stanford Encyclopedia of Philosophy Plato.stanford.edu/entries/epiphenomenalism
4. Epiphenomenalism. Internet Encyclopedia of Philosophy www.iep.utm.edu/epipheno/. Accessed 06 October, 2013
5. Audi, Robert (1999)*: The Cambridge Dictionary of Philoosphy* (Ed.), Cambridge University Press, New York, p. 685.
6. Epiphenomenalism. Internet Encyclopedia of Philosophy www.iep.utm.edu/epipheno/. Accessed 06 October, 2013
7. उपर्युक्त
8. Panpsychism. Internet Encyclopedia of Philosophy www.iep.utm.edu/panpsych/. Accessed 06 October, 2013

9. Consciousness. Internet Encyclopedia of Philosophy www.iep.utm.edu/consciou/. Accessed 06 October, 2013
10. Zeller, Eduard (1958): *Outlines of the History of Greek Philosophy* (L.R. Palmor, Trans.), Meridian Books, New York, p.16
11. Spinoza, Benedict De (2017): *The Ethics* (R.H.M. Trans.), Global Grey ebooks, p. 38. https://www.globalgreyebooks.com/ethics-spinoza-ebook/. Accessed 24 June, 2018. Also see Ethics II, Prop. 3
12. Ibid., p. 46. Also see Ethics II, Prop. 13, Scholium
13. Cahn, Steven M. (2012): *Classics of Western Philosophy* (8th Edition) (ed.), Hackett Publishing Company, Inc., Indianapolis/Cambridge, p. 667. Also see Monadology, Sec. 66
14. Whitehead, A.N. (1938): *Modes of Thought*, The Macmillan Company, New York, p. 156

LBP PUBLICATION